# हिंदी साहित्य और सांस्कृतिक चिंतन

संपादक
डॉ. संजीव कुमार विश्वकर्मा

REDMI NOTE 9 PRO MAX
AI QUAD CAMERA

# अनुक्रम


सम्पादकीय 5

1. बदलते सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्य एवं नरेश मेहता का कथा साहित्य 9
**बबिता पाठक**

2. औपनिवेशिक भारत में सिनेमा, रेलवे और समाज का अंतर संबध 14
**डॉ. अखिल कुमार गुप्ता**

3. गोविन्द मिश्र के उपन्यासों में भारतीय भाषा एवं संस्कृति 31
**चिंकी यादव**

4. नई सदी की हिन्दी कविता में स्त्री विमर्श 41
**डॉ. राम पाण्डेय**

5. जीवन मूल्य भारतीय तथा पाश्चात्य दृष्टिकोण 47
**डॉ. सुप्रिया ई.**

6. हिंदी भाषा प्रेमी डॉ0 हरिश्चंद्र वर्मा के काव्य में प्रतीक-विधान 51
**ज्योति**

7. बुन्देलखण्ड में धर्म और लोक संस्कृति डॉ. बलभद्र तिवारी के सन्दर्भ में 57
**चाँदनी चौरसिया**

8. नमिता सिंह की कहानियों में भाषा एवं संस्कृति की जीवंतता 65
**मंजू माली**

9. अपने अपने अजनबी 74
**प्रोफेसर डॉ. विजय महादेव गाडे**

10. विद्यासागर नौटियाल की कहानियों में पर्वतीय संस्कृति 80
**आरती सैनी**

11. हिन्दी साहित्य और सिनेमा 88
**डॉ. कुलदीप**

12. हिन्दी साहित्य में धर्म एवं संस्कृति 92
**डॉ. राम टहल दास**



REDMI NOTE 9 PRO MAX
AI QUAD CAMERA

# जीवन मूल्य भारतीय तथा पाश्चात्य दृष्टिकोण

**डॉ. सुप्रिया ई.**
सहायक आचार्य
फातिमा कॉलेज
मदुरै - 18

**"उम्र का अधिकांश हिस्सा**
**ही गुजर जाए**
**तथाकथित सुख के साधन**
**अंततः उपलब्ध भी हो जाएँगे**
**परंतु**
**उपभोग करने के लिए**
**हम नश्वर शरीर**
**कहाँ से लाएँगे ?**
**जीवन ही जब नहीं बचा पाए**
**जीवन मूल्य**
**क्या बचाएँगे?"**

मूल्यों का आरंभ परिवार से होता है। जीवन परिवर्तनशील है और उसके साथ कुछ जीवन मूल्यों में भी बदलाव आता है, परंतु कुछ ऐसे शास्वत जीवन मूल्य हैं जो कभी नहीं बदलते है। जीवन मूल्यों के संबंध में अनेक मत प्रचलित है। मूल्यों को परिभाषा के सीमा में नहीं बाँधा जा सकता है। हर एक समाज अपनी आवश्यकता के अनुसार मूल्यों का निर्माण करता है। मूल्यों द्वारा सामाजिक व्यवस्था का निर्माण होता है। मूल्य समाज की मान्यताओं और धारणों के अनुसार बनते है और मिटते है और बदलते रहते हैं लेकिन शाश्वत मूल्य न कभी बदलते है और न मिटते हैं।



NOTE 9 PRO MAX